

उच्च शिक्षा में सामाजिक आर्थिक व्यवस्था का विकास

Uma Lata Patel^{1*}, Dr. Ramavtar Singh²

¹ Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P. India

Email: ouriginal.sku@gmail.com

² Professor, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P. India

सार- यह सामाजिक आर्थिक व्यवस्था का एक हिस्सा है और इसलिए युवा लोगों की सोच प्रक्रिया को बदलकर और समाज के बारे में नए निष्कर्षों को सामने रखकर समाज को बदलने में विश्वविद्यालय की एक गतिशील भूमिका है जो बदले में उत्पादन, सेवाओं और प्रबंधन को प्रभावित कर सकती है। उक्त प्रणाली का. भारत जैसे बड़े देश में कुछ लोगों के लिए उच्च शिक्षा उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी सभी के लिए बुनियादी शिक्षा। पूर्व गतिविधि के सभी क्षेत्रों में आवश्यक नेतृत्व प्रदान करता है जबकि बाद वाला 2. एक प्रबुद्ध और साक्षर समाज का निर्माण करना, जो विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विकास का लाभ उठाने में सक्षम हो। ज्ञान का वैश्वीकरण भारत सहित सभी विकासशील देशों में उच्च शिक्षा की पारंपरिक प्रणाली के सामने गंभीर खतरे पैदा करने वाला है। ऐसा कहा जाता है कि ज्ञान इतनी तेजी से बढ़ रहा है कि हर तीन साल में यह दोगुना हो जाता है। उच्च शिक्षा संस्थानों को अपने कार्यक्रमों को फिर से डिज़ाइन करना होगा ताकि उन्हें लचीला, लागत प्रभावी और बाजार अर्थव्यवस्था के लिए प्रासंगिक बनाया जा सके।

कीवर्ड: उच्चशिक्षा, सामाजिक, विश्वविद्यालय, प्रौद्योगिकी और भारत

-----X-----

परिचय

भारत में शिक्षक तीसरे सबसे बड़े सेवा क्षेत्रों में से एक हैं। शिक्षक शिक्षा अब एक प्रशिक्षण प्रगति नहीं है, बल्कि शिक्षकों को पढ़ाने और उनके कल्याण के लिए सीखने में सक्षम बनाने के लिए हमले की एक शिक्षा रेखा है। एनसीटीई (1988) ने बताया है कि शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम दक्षताओं और प्रतिबद्धता पर अधिक महत्व देगा। यह शिक्षक तैयारी रणनीतियों में क्रांति लाने का आह्वान करता है। इस बड़े कार्यबल को उचित प्रशिक्षण और अभिविन्यास की आवश्यकता है। वर्तमान में भारत में शिक्षक शिक्षा के लिए बड़ी संख्या में संस्थाएँ मौजूद हैं। 2,500 से अधिक प्रारंभिक शिक्षक शिक्षा संस्थान, शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय और शिक्षा विभाग बड़ी संख्या में छात्रों के साथ शिक्षक प्रशिक्षण में लगे हुए हैं।

एनसीईआरटी और विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम के अनुसार शिक्षक शिक्षा की तैयारी के दौरान शिक्षक प्रशिक्षक द्वारा सहकर्मि समूह में कॉलेज स्तर पर शिक्षक प्रशिक्षु को सीखने के अनुभव के विभिन्न प्रकार दिए जाते हैं। शिक्षण

सबसे अच्छे और महान व्यवसायों में से एक है और शिक्षक इस दुनिया में एक प्रमुख व्यक्तित्व है। शिक्षक ज्ञान के दूत होते हैं और युवा मस्तिष्कों के पोषण के लिए संभवतः पेशवरों का सबसे महत्वपूर्ण समूह होते हैं। सभी संसाधन व्यक्ति या अन्य व्यवसायों के सदस्य शिक्षकों द्वारा बनाए जाते हैं। इसलिए विद्यार्थियों के जीवन को उज्ज्वल और उत्पादक बनाने में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। और शिक्षक शिक्षक ऐसे शिक्षक बनाने के मामले में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जो शिक्षा के विभिन्न स्तरों के छात्रों को सीधे पढ़ाने में लगे होते हैं। इसलिए शिक्षक प्रशिक्षकों के मामले पर बहुत अधिक जोर दिया जाना चाहिए। शिक्षण की गुणवत्ता सक्रिय, समर्पित और संतुष्ट शिक्षकों पर निर्भर करती है। जो शिक्षक अपने कार्य से संतुष्ट हैं वे अधिक एकाग्रता एवं निष्ठा से अपने दायित्वों का निर्वहन कर सकते हैं। यह एक स्थापित तथ्य है कि एक संतुष्ट शिक्षक शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करता है।

एक आधुनिक समाज अपने नागरिकों की प्रतिभा का पूर्ण उपयोग किए बिना आर्थिक विकास, तकनीकी विकास और सांस्कृतिक उन्नति के अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता है। इस प्रकार शिक्षाविद् छात्रों की बौद्धिक क्षमता को पूरी तरह से विकसित करने का प्रयास करते हैं और यह देखने का प्रयास करते हैं कि उनकी क्षमताओं को पूरी तरह से महसूस किया जाए और व्यक्तियों और समाज के लाभ के लिए उपयोग किया जाए। बैचलर ऑफ एजुकेशन ने अब अत्यधिक सामाजिक महत्व प्राप्त कर लिया है और एक समृद्ध पाठ्यक्रम की सहायता से हर राज्य में इसकी समीक्षा और पुनर्गठन किया जा रहा है। शिक्षक शिक्षा को इस प्रकार परिभाषित किया गया है, "सभी औपचारिक और अनौपचारिक गतिविधियाँ और अनुभव जो किसी व्यक्ति को शिक्षण पेशे के सदस्य के रूप में जिम्मेदारियों को संभालने और अपनी जिम्मेदारियों को अधिक प्रभावी ढंग से निभाने के लिए योग्य बनाने में मदद करते हैं"। मूल्य अभिविन्यास में शिक्षकों की प्रभावशाली स्थिति और निश्चित भूमिका होती है, वे भावनात्मक बुद्धिमत्ता पैदा करते हैं और वर्तमान समय में हमारे युवाओं में शैक्षणिक उपलब्धि को बढ़ावा देते हैं।

यह अवधारणा कि शिक्षक पैदा होते हैं, बनाये नहीं जाते, पुराने दिनों में भी प्रचलित थी। यह उपयुक्त टिप्पणी की गई है, "यदि आप एक लड़के को शिक्षित करते हैं, तो आप एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं, यदि आप एक लड़की को शिक्षित करते हैं, तो आप पूरे परिवार को शिक्षित करते हैं और यदि आप एक शिक्षक के रूप में एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं, तो आप पूरे समुदाय को शिक्षित करते हैं"।

साहित्य की समीक्षा

मैकइननी, डेनिस और कोपरशोक, हैंके और वांग, हुई और मोरिन, एलेक्जेंडर। (2018)। शिक्षकों की मनोवैज्ञानिक भलाई, नौकरी से संतुष्टि, व्यावसायिक आत्म-अवधारणा और नौकरी छोड़ने के इरादों के निर्धारकों के बारे में बहुत कम जानकारी है। इस पेपर में, शिक्षकों की व्यावसायिक विशेषताओं (यानी पेशेवर और व्यक्तिगत विशेषताओं) की जांच निर्धारक के रूप में की गई थी। इसके बाद, 1,109 हांगकांग प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक विशेषताओं की प्रकृति का वर्णन करने के लिए एजुकेशन मोटिवेशन एंड एट्रिब्यूट प्रोफाइल (एडएमएपी) पैमानों का उपयोग किया गया। इसके अलावा, शिक्षक परिणामों के साथ संबंधों की जांच की गई। EdMAP पैमानों की निर्माण वैधता और विश्वसनीयता संतोषजनक थी।

परिणामों ने शिक्षकों की व्यावसायिक विशेषताओं और उनकी भलाई, नौकरी से संतुष्टि और आत्म-अवधारणा के बीच सकारात्मक संबंध दिखाया, और छोड़ने के इरादों के साथ नकारात्मक संबंध दिखाया।

सेनेर, सबरीये। (2015)। वर्तमान अध्ययन शिक्षण पेशे के प्रति शिक्षक प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण और छात्रों के दृष्टिकोण और स्नातक स्कूल के बीच संबंध दोनों की जांच करता है। एक मिश्रित डिज़ाइन नियोजित किया गया था। एक राज्य विश्वविद्यालय के ईएलटी विभाग के 118 छात्र अनुसंधान समूह का गठन करते हैं। डेटा को ओपन-एंडेड प्रश्नों और दृष्टिकोण पैमाने के माध्यम से एकत्र किया गया था। डेटा विश्लेषण से पता चला कि अधिकांश छात्र शिक्षण पेशे के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं। गुणात्मक डेटा विश्लेषण से पता चला कि महिला छात्रों में पुरुषों की तुलना में अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण था। जब स्कूल स्नातक स्तर के अनुसार छात्रों के दृष्टिकोण में अंतर की जांच की गई, तो समूहों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। यह आवश्यक है कि अनातोलियन शिक्षक प्रशिक्षण उच्च विद्यालयों के पाठ्यक्रम को फिर से डिज़ाइन किया जाए और शिक्षा मंत्रालय और नीति निर्माताओं को कुछ उपाय करने चाहिए और नई शिक्षण नीतियां विकसित करनी चाहिए, और शिक्षण पेशे पर चेतना विकसित करने के लिए अतिरिक्त अवसर प्रदान करना चाहिए।

अंबलगन, एस और जगनाथन, जयचित्रा। (2021)। वर्तमान अध्ययन में, उद्देश्य बी.एड. के बीच फ़िलपड कक्षा की धारणाओं को निर्धारित करना है। शिक्षक प्रशिक्षु ग्राहम ब्रेंट जॉनसन (2006) द्वारा फ़िलपड क्लासरूम स्केल की धारणाओं पर डेटा इकट्ठा करने के लिए प्रश्नावली तैयार की गई थी। गणित विभाग, कॉलेज ऑफ एजुकेशन, मदुरै, तमिलनाडु से 23 छात्रों का एक नमूना जानबूझकर चुना गया था। इस शोध के निष्कर्षों से पता चलता है कि बी.एड. के बीच फ़िलपड कक्षा की धारणाएँ प्रशिक्षु शिक्षक 17%, 43% और 39% छात्रों में फ़िलप कक्षा की धारणा निम्न, औसत और उच्च स्तर की है। 88% या तो इस कथन से पूरी तरह सहमत या सहमत हैं, जबकि केवल 12% छात्र इस कथन से असहमत और दृढ़ता से असहमत हैं कि फ़िलप कक्षा पारंपरिक कक्षा निर्देश की तुलना में अधिक आकर्षक है। बीएड शिक्षक प्रशिक्षुओं के बीच फ़िलप कक्षा की धारणा का माध्य, माध्यिका और मोड 71.95, 71.00 और 71.00।

कार्लबर्ग, मार्टिन और बेज़िना, क्रिस्टोफर। (2020)। यह लेख एक बड़े अध्ययन के निष्कर्षों की रिपोर्ट करता है

जिसका उद्देश्य निरंतर व्यावसायिक विकास पर स्वीडन की चार नगर पालिकाओं में प्रशिक्षितों की धारणाओं की पहचान करना है। यह शुरुआती प्रशिक्षितों पर ध्यान केंद्रित करता है, अर्थात् वे जो अपने करियर के पहले पांच वर्षों में हैं। यह अध्ययन इस बढ़ती चिंता के बीच किया गया है कि स्वीडन में सेवाकालीन प्रशिक्षण के मौजूदा मॉडल शिक्षण प्रेरणा और छात्र उपलब्धि पर वांछित प्रभाव नहीं छोड़ रहे हैं; कि शिक्षण पेशा स्वयं को असंबद्ध, अशक्त, अविश्वासित महसूस करता है। यह ऐसे संदर्भ में किया गया है जहां प्रशिक्षितों को इस पेशे में आकर्षित करना कठिन हो रहा है, और जहां प्रशिक्षितों का क्षरण अधिक है। प्रतिक्रियाएं इस बात पर प्रकाश डालने में मदद करती हैं कि नए प्रशिक्षितों का समर्थन करने के लिए नगर पालिकाओं और शिक्षण शिक्षा संस्थानों को किस पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। स्कूलों, नगर पालिकाओं और शिक्षण शिक्षा संस्थानों के लिए निहितार्थ निकाले गए हैं क्योंकि उन्हें नए प्रशिक्षितों को पर्याप्त और निरंतर समर्थन सुनिश्चित करने के लिए अधिक सहयोगी उपक्रमों में शामिल होने के लिए एक साथ आने की जरूरत है।

पी., राजेंद्रन और आनंदरासु, आर. (2020)। अध्ययन का उद्देश्य पेरम्बलुर जिले में बी.एड. प्रशिक्षुओं के वैज्ञानिक दृष्टिकोण के स्तर का पता लगाना था। इस अध्ययन में एक सर्वेक्षण पद्धति शामिल है। अध्ययन में नमूने का आकार 941 बी.एड. प्रशिक्षु थे, जिन्हें सरल यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक के माध्यम से चुना गया था। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य बी.एड., प्रशिक्षुओं के लिंग, अध्ययन का वर्ष, महाविद्यालय का इलाका, परिवार के प्रकार जैसे जनसांख्यिकीय चर के बारे में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का पता लगाना है। इस अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रक्रियाएँ थीं; डेटा का विश्लेषण करने के लिए माध्य, मानक विचलन और परीक्षण। अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष थे; मैं)। बी.एड. प्रशिक्षुओं का वैज्ञानिक दृष्टिकोण का स्तर औसत है। ii) महिला बी.एड., प्रशिक्षुओं में पुरुष बी.एड., प्रशिक्षुओं की तुलना में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का काफी उच्च स्तर है। iii) द्वितीय वर्ष के बी.एड. प्रशिक्षुओं में प्रथम वर्ष के बी.एड. प्रशिक्षुओं की तुलना में काफी उच्च स्तर का वैज्ञानिक दृष्टिकोण होता है। iv) शहरी बी.एड., प्रशिक्षुओं में ग्रामीण बी.एड., प्रशिक्षुओं की तुलना में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का काफी उच्च स्तर है। v) एकल परिवार और बी.एड. प्रशिक्षुओं के संयुक्त परिवार में वैज्ञानिक दृष्टिकोण समान स्तर का होता है। मेरा निष्कर्ष है कि वर्तमान अध्ययन से

पता चलता है कि बी.एड. के प्रशिक्षुओं की संख्या अधिक है, उनमें औसत वैज्ञानिक दृष्टिकोण है।

1 सिंहावलोकन

भावी पीढ़ियाँ सतत विकास की जटिलताओं से निपटना कैसे सीखें, इसे आकार देने में उच्च शिक्षा एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह समाज की बौद्धिक शक्ति और भविष्य की संभावनाओं की ताकत का कंडीशनर है। यह प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा प्रणाली के अच्छे काम को उसके तार्किक निष्कर्ष तक आगे बढ़ाता है और इस प्रकार अरबों व्यक्तियों के गुप्त ज्ञान का दोहन करने में मदद करता है। यह लोगों को मानवता के सामने आने वाले महत्वपूर्ण, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, नैतिक और आध्यात्मिक मुद्दों पर विचार करने का अवसर प्रदान करता है। यह विशिष्ट ज्ञान और कौशल के प्रसार के माध्यम से राष्ट्रीय विकास में योगदान देता है। इसलिए यह अस्तित्व के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है। उच्च शिक्षा ने आधुनिक प्रौद्योगिकी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है जिससे खाद्य उत्पादन में वृद्धि, औद्योगिक विकास, संचार प्रौद्योगिकी में क्रांति और जीवन रक्षक चिकित्सा तकनीकों का आगमन हुआ है।

यह सामाजिक आर्थिक व्यवस्था का एक हिस्सा है और इसलिए युवा लोगों की सोच प्रक्रिया को बदलकर और समाज के बारे में नए निष्कर्षों को सामने रखकर समाज को बदलने में विश्वविद्यालय की एक गतिशील भूमिका है जो बदले में उत्पादन, सेवाओं और प्रबंधन को प्रभावित कर सकती है। उक्त प्रणाली का भारत ज .ैसे बड़े देश में कुछ लोगों के लिए उच्च शिक्षा उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी सभी के लिए बुनियादी शिक्षा। पूर्व गतिविधि के सभी क्षेत्रों में आवश्यक नेतृत्व प्रदान करता है जबकि बाद वाला 2. एक प्रबुद्ध और साक्षर समाज का निर्माण करना, जो विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विकास का लाभ उठाने में सक्षम हो। ज्ञान का वैश्वीकरण भारत सहित सभी विकासशील देशों में उच्च शिक्षा की पारंपरिक प्रणाली के सामने गंभीर खतरे पैदा करने वाला है। ऐसा कहा जाता है कि ज्ञान इतनी तेजी से बढ़ रहा है कि हर तीन साल में यह दोगुना हो जाता है। उच्च शिक्षा संस्थानों को अपने कार्यक्रमों को फिर से डिज़ाइन करना होगा ताकि उन्हें लचीला, लागत प्रभावी और बाजार अर्थव्यवस्था के लिए प्रासंगिक बनाया जा सके।

2 भारत में उच्च शिक्षा का विकास

देश की समृद्धि विश्वविद्यालय से जुड़ी हुई है। एक दुष्ट विश्वविद्यालय एक दूषित फव्वारे की तरह है जो इससे पीने वालों के स्वास्थ्य को खतरे में डालने के लिए बाध्य है। किसी राष्ट्र का भाग्य विश्वविद्यालय में आकार और ढाला जाता है। भारत जैसे विकासशील लोकतांत्रिक देश, जिसने सामाजिक-आर्थिक न्याय स्थापित करने का कार्य - अपने सामने रखा है, में विश्वविद्यालय की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण एवं क्रांतिकारी है। आज भारत में विश्वविद्यालय शिक्षा का उद्देश्य उन पुरुषों और महिलाओं को शिक्षित करना होना चाहिए जो समाज के विकास को उच्चतम प्राप्य स्तर तक बढ़ावा देंगे।

3 बदलती दुनिया में उच्च शिक्षा के लिए चुनौतियाँ

उच्च शिक्षा जिस वास्तविकता में कार्य कर रही है वह बहुत तेजी से बदलती दुनिया को प्रतिबिंबित कर रही है। पूर्व-पश्चिम वैचारिक विभाजन की समाप्ति, मानवाधिकारों की व्यावहारिक मान्यता की विश्वव्यापी मांग, रंगभेद के उन्मूलन के लिए गंभीर संघर्ष, लोकतंत्र की प्रगति, संयुक्त राष्ट्र प्रणाली के अधिकार का सुदृढीकरण, में अधिक विश्वास देता है। एकजुटता की भावना से निपटने के लिए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की कार्यवाई, आज की दुनिया की प्रमुख चुनौतियाँ: दुनिया के कुछ हिस्सों में जनसंख्या विस्फोट से जुड़े असंतुलित जनसांख्यिकीय रुझान, भूख, बीमारी, गरीबी, बेरोजगारी, अज्ञानता, सुरक्षा पर्यावरण का, शांति का निर्माण, लोकतंत्र की मजबूती, मानवाधिकारों का व्यावहारिक सम्मान और सांस्कृतिक विविधता का संरक्षण। यह सब संयुक्त राष्ट्र प्रणाली सहित अंतरराष्ट्रीय संगठनों और राष्ट्रीय स्तर पर विश्वविद्यालय जैसे संस्थानों के मिशनों पर पुनर्विचार की मांग करता है। जहां तक यूनेस्को का सवाल है, संगठन वर्तमान समय में अपने मिशन की प्रासंगिकता को काफी मजबूत देखता है। अपने संवैधानिक मिशन की पूर्ति में, अर्थात् "ज्ञान को बनाए रखने, बढ़ाने और फैलाने के लिए... शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति के क्षेत्र में सक्रिय व्यक्तियों के अंतर्राष्ट्रीय आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करके, यूनेस्को उच्च शिक्षा और अकादमिक पर निर्भर करता है। कार्यवाई में एक प्रमुख भागीदार के रूप में विद्वान समुदाय"। इसके अलावा, यह उच्च शिक्षा को अपने कार्यक्रम का एक आंतरिक घटक और अपनी व्यस्तताओं में प्राथमिकता मानता है।

आधुनिक आर्थिक विकास कठोर या थोपी गई संरचनाओं और मॉडलों का पालन नहीं कर सकता। मॉडलों के कठोर

प्रसारण पर आधारित सहयोग की रणनीतियों की विफलता, जैसा कि किया गया है, उदाहरण के लिए, अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका या पूर्वी यूरोप में, इस बात का सबूत देती है कि इसे बदलना चाहिए। यह बात उच्च शिक्षा की समस्याओं पर भी लागू होती है। उच्च शिक्षा समस्याओं पर यूनेस्को परामर्श के निष्कर्षों में से एक यह है कि अधिक से अधिक लोग और संस्थान इस तथ्य से अवगत हो गए हैं कि, सभी क्षेत्रों में, विदेशी अवधारणाओं और मूल्यों को सख्ती से अपनाया जा रहा है और क्षेत्रीय और राष्ट्रीय संस्कृतियों की उपेक्षा की जा रही है। दर्शनशास्त्रों का शिक्षा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। उच्च शिक्षा में सुधार करने वाले राज्यों को भी इस निष्कर्ष पर विचार करना चाहिए। स्वदेशी और सतत विकास की अवधारणा का मूल आधार संयुक्त राष्ट्र द्वारा अपनी अंतर्राष्ट्रीय विकास रणनीति (आईडीएस) में तैयार किया गया था जिसे यूएनओ की महासभा द्वारा अनुमोदित किया गया था। आईडीएस का मानना है कि आर्थिक विकास दो मुख्य आधारों पर आधारित होना चाहिए; गरीबी में कमी और मानव संसाधनों का विकास। उत्तरार्द्ध के संबंध में, विश्वविद्यालय और अन्य उच्च शिक्षण संस्थान, पहले से कहीं अधिक, विकास की रणनीति के कार्यान्वयन में मुख्य अभिनेता बन गए हैं, विशेष रूप से मानव संसाधन विकास में उनकी भूमिका के संबंध में।

4 बदलती दुनिया में उच्च शिक्षा की प्रतिक्रिया

हम समाज की नई जरूरतों, जो बहुलवादी और विविध हैं, का सामना करने के लिए उच्च शिक्षा में पुनर्विचार और दूरगामी परिवर्तन और सुधार की विश्वव्यापी प्रक्रिया देख रहे हैं। उच्च शिक्षा के प्रभारी राष्ट्रीय अधिकारी और संस्थान स्वयं उच्च शिक्षा के मिशनों और कार्यों की फिर से जांच कर रहे हैं। परिणामस्वरूप, संस्थागत संरचनाओं और अध्ययन कार्यक्रमों के साथ-साथ शिक्षण, प्रशिक्षण और सीखने के साधनों और तरीकों में गहन सुधार किए जाने की आवश्यकता है। इसका प्रत्यक्ष परिणाम दुनिया के व्यावहारिक रूप से सभी क्षेत्रों में उच्च शिक्षा का विविधीकरण रहा है, जैसा कि शिक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (1989) के 41वें सत्र से संकेत मिलता है, जो माध्यमिक शिक्षा के बाद के विषय और रोजगार के संबंध में इसके विविधीकरण पर चर्चा करता है।

मानव संसाधन विकास के भाग के रूप में उच्च-योग्य कर्मियों का प्रशिक्षण - उच्च शिक्षा का मुख्य कार्य बना हुआ है। अधिक से अधिक गतिविधियों में उन्नत या अतिरिक्त प्रशिक्षण की बढ़ती आवश्यकता के साथ, समाज

आजीवन सीखने के एक मॉडल की ओर बढ़ रहा है, जो धीरे-धीरे सीमित अवधि के लिए केंद्रित सीखने और अध्ययन के वर्तमान प्रचलित मॉडल की जगह ले रहा है।

इन चुनौतियों के जवाब में, आर्थिक साझेदारों के साथ अकादमिक समुदाय की सक्रिय भागीदारी को उच्च शिक्षा के मिशन का एक अभिन्न अंग माना जा रहा है। ये संबंध अभी भी मुख्य रूप से अनुसंधान से संबंधित हैं। हालाँकि, उन्हें विस्तारित करने के उद्देश्य से नए विकास किए गए हैं ताकि शिक्षण, अध्ययन के संगठन, संस्थागत संरचनाओं आदि को भी कवर किया जा सके। साथ ही, नए उपयुक्त संगठनात्मक ढांचे और व्यवस्थाएं, जो कि रूपों में "लचीलेपन" की आवश्यक डिग्री पर आधारित हैं। स्थिर और पारस्परिक रूप से लाभप्रद बातचीत को बढ़ावा देने, रखरखाव और मजबूती के लिए व्यवहार्य तंत्र के रूप में कार्य करने के लिए कार्यक्रम वितरण की मांग की जा रही है।

5 विकास के लिए उच्च शिक्षा की प्रासंगिकता

प्रासंगिकता विशेष रूप से समाज के प्रति उच्च शिक्षा की भूमिका को संदर्भित करती है और लोकतंत्रीकरण, काम की दुनिया और संपूर्ण शिक्षा प्रणाली के संबंध में उच्च शिक्षा की जिम्मेदारियों और गंभीर मानवीय समस्याओं के समाधान की खोज से संबंधित मामलों से संबंधित है। जैसे पर्यावरण, शांति और अंतर्राष्ट्रीय समझ, लोकतंत्र, मानवाधिकार। उच्च शिक्षा की प्रासंगिकता को समाज को प्रदान की जाने वाली विभिन्न प्रकार की "सेवाओं" के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है। इस अवधारणा का अर्थ है विश्वविद्यालय खोलना, इसे सामाजिक जरूरतों को पूरा करना और पूरे समाज के साथ संवाद को मौलिक रूप से नवीनीकृत करना। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के सर्वोत्तम तरीकों में से एक यह होगा कि विश्वविद्यालयों को समाज, वाणिज्य, उद्योग के साथ कई, आवश्यक रूप से औपचारिक नहीं, संबंध स्थापित करने, पहुंच की अधिक संवेदनशील स्थितियों का निर्माण करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए, ताकि विभिन्न में भागीदारी को आसान बनाया जा सके। उन लोगों के लिए उच्च शिक्षा के रूप जो प्रवेश की औपचारिक और पारंपरिक प्रणाली का पालन करने में असमर्थ थे, अध्ययन और स्नातक के अधिक लचीले संगठन के साथ-साथ नई संचार और सूचना प्रौद्योगिकियों की सहायता से बाहरी कार्यक्रमों का विकास किया गया जो व्यक्तियों और समुदायों तक पहुंचने में सुविधा प्रदान करेगा। ग्रामीण क्षेत्रों में।

इसका मतलब यह भी होगा कि विश्वविद्यालय, अपने विभेदित छात्र समुदाय के कारण, जीवन भर सीखने के सिद्धांत के प्रति वास्तव में प्रतिबद्ध हो जाएगा। यह रवैया विश्वविद्यालय और उसके विभिन्न सामाजिक साझेदारों के बीच नए प्रकार के संबंधों की स्थापना की मांग करेगा, जिसका तात्पर्य अध्ययन कार्यक्रमों की आवश्यकताओं और प्रशिक्षण और पुनः प्रशिक्षण की आवश्यकताओं का निरंतर विश्लेषण करना होगा। इसका तात्पर्य छात्र के शैक्षणिक कार्य के लिए प्रासंगिक सक्रिय-जीवन अनुभव की बेहतर पहचान के लिए तरीकों की स्थापना भी होगा।

वास्तव में, ऐसी दुनिया में जहां सामाजिक-आर्थिक विकास अधिक ज्ञान-गहन होता जा रहा है और उन्नत प्रशिक्षण वाले पेशेवर और प्रबंधकीय विशेषज्ञों पर तेजी से निर्भर हो रहा है, किसी भी व्यापक विकास कार्यक्रम के लिए उच्च शिक्षा की भूमिका एक महत्वपूर्ण तत्व बन जाती है। यह सभी देशों के लिए सच है, लेकिन विकासशील देशों और मध्य और पूर्वी यूरोप के देशों के मामले में इस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है जो बड़े परिवर्तनों के दौर से गुजर रहे हैं।

6 उच्च शिक्षा की गुणवत्ता

उच्च शिक्षा में बढ़ती प्रासंगिकता की मांग इसकी बढ़ी हुई गुणवत्ता की मांग के साथ-साथ चलती है। गुणवत्ता, जो उच्च शिक्षा में कोई नई चिंता नहीं है, हालांकि उच्च शिक्षा के विकास और सुधार से संबंधित वर्तमान नीतिगत बहस में महत्वपूर्ण हो गई है। यह अपने सभी कार्यों और गतिविधियों को शामिल करता है: शिक्षण, प्रशिक्षण और अनुसंधान की गुणवत्ता - जो इसके कर्मचारियों और इसके कार्यक्रमों और संसाधनों की गुणवत्ता में निहित है; सीखने की गुणवत्ता - शिक्षण और अनुसंधान के परिणाम के रूप में, लेकिन इसका तात्पर्य छात्रों की गुणवत्ता से भी है; शासन और प्रबंधन की गुणवत्ता - जिसका शिक्षण, सीखने और अनुसंधान के माहौल पर निर्णायक प्रभाव पड़ता है।

- स्टाफ की गुणवत्ता
- छात्रों की गुणवत्ता

7 उच्च शिक्षा में परिवर्तन एवं विकास

आज दुनिया के सामने मौजूद चुनौतियों की भयावहता और प्रवृत्तियों को उलटने के लिए कार्रवाई की तत्काल आवश्यकता है, जो कई मामलों में उस बिंदु तक पहुंच गई है, जिसके आगे हस्तक्षेप करना संभव नहीं है,

सामाजिक-आर्थिक विकास मॉडल में आमूल-चूल परिवर्तन की मांग करना और क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर नीति-निर्माण में अब तक उपयोग की जाने वाली मशीनरी और प्रक्रियाओं का। पुनर्विचार और आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता भी उच्च शिक्षा से संबंधित सभी बहसों का मूलमंत्र है। यह यूनेस्को की क्षमता के क्षेत्र में नहीं है, न ही संगठन ने विशिष्ट राष्ट्रीय संदर्भों के बावजूद उच्च शिक्षा के विकास के लिए मॉडलों के लिए तैयार योजनाएं विकसित करने का लक्ष्य निर्धारित किया है। उच्च शिक्षा संस्थानों, छात्र समुदाय सहित शैक्षणिक समुदाय के साथ बातचीत का यह विशेषाधिकार प्रत्येक देश और प्रत्येक सरकार पर निर्भर करता है। हालाँकि, यूनेस्को इसे अपने महत्वपूर्ण कार्यों में से एक के रूप में देखता है, सदस्य राज्यों द्वारा स्थापित अपने जनादेश के हिस्से के रूप में, उच्च शिक्षा में रुझानों और विकास पर जानकारी और अनुभव के आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करना, इसकी भूमिकाओं और कार्यों पर शिक्षण और अनुसंधान को बढ़ावा देना, और अंततः, सामान्य सम्मेलन द्वारा स्थापित तरीकों और माध्यमों से सदस्य राज्यों की सहायता करना - उच्च शिक्षा के माध्यम से उनके प्रशिक्षण और अनुसंधान क्षमताओं को विकसित करने और गुणवत्ता और प्रासंगिकता में सुधार के लिए संयुक्त गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के उनके प्रयासों में।

8 उच्च शिक्षा संस्थानों में चुनौतियाँ

विकास के लिए आग्रह करने के लिए प्रारंभिक चरण में इन मुद्दों को ठीक करने की अपेक्षा की जाती है अन्यथा यह अपेक्षित लक्ष्य प्राप्त करने में एक बड़ी बाधा होगी। "उच्च शिक्षा" और "आर्थिक विकास" आपस में जुड़े हुए हैं क्योंकि एक क्षेत्र में सुधार दूसरे पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। इस संबंध में ऐसी उच्च योग्य जनशक्ति तैयार करने की पहल की जानी चाहिए जो देश की वृद्धि और विकास के स्तर को बनाए रखने में मदद करे। उच्च शिक्षा का दायरा केवल स्नातक या परास्नातक तक ही सीमित नहीं है, इसमें व्यावसायिक और व्यावसायिक योग्यता भी शामिल है, एक बार यह कहीं उद्धृत किया गया है कि "देश का प्रबंधन उच्च योग्य हाथों में देना एक आश्वासन है कि यह एक प्रगतिशील मार्ग की ओर ले जाएगा"। आज भारत में उच्च शिक्षा के सामने कई बुनियादी समस्याएँ हैं।

इनमें अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा और सुविधाएँ, संकाय पदों में बड़ी रिक्तियाँ और उनके गरीब संकाय, कम छात्र नामांकन दर, पुरानी शिक्षण पद्धतियाँ, गिरते अनुसंधान मानक, अप्रचलित छात्र, भीड़भाड़ वाली कक्षाएँ और व्यापक भौगोलिक, आय, लिंग और जातीय असंतुलन शामिल हैं।

गिरते मानकों से संबंधित चिंताओं के अलावा, कई निजी प्रदाताओं द्वारा छात्रों के शोषण की भी सूचना है। गरीब परिवारों से आने वाले छात्रों के लिए गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा तक समान पहुंच सुनिश्चित करना एक बड़ी चुनौती है।

9. उच्च शिक्षा की भूमिकाएँ

हालाँकि जैसा कि ऊपर बताया गया है, सामाजिक परिवेश में बड़े बदलाव हुए हैं, उच्च शिक्षा की भूमिकाओं को नए सिरे से पहचानने की आवश्यकता है।

(1) आर्थिक एवं सामाजिक विकास के लिए आवश्यक मानव संसाधनों का विकास

लंबे समय से उच्च शिक्षा ने सरकारी और निजी क्षेत्र के नेताओं को तैयार करने की भूमिका निभाई है। आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल के साथ उच्च स्तरीय मानव संसाधन विकसित करना उच्च शिक्षा की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका रही है।⁶ इसके अलावा, वर्तमान ज्ञान समाज में जहां पूरे समाज का ज्ञान स्तर मुद्दे पर है, उच्च शिक्षा नहीं हो सकती है बस थोड़ी संख्या में नेता विकसित करें। उच्च शिक्षा का विस्तार करना महत्वपूर्ण होता जा रहा है ताकि व्यापक स्तर पर मानव संसाधनों का विकास किया जा सके और पूरे समाज के ज्ञान के स्तर को ऊपर उठाया जा सके।

(2) ज्ञान का निर्माण और प्रसार

एक ज्ञान समाज में ज्ञान के निर्माण और प्रसारण में, उच्च शिक्षा को एक केंद्रीय भूमिका निभाने की मांग की जाती है। विशेष रूप से, ज्ञान और तकनीकी कौशल को लागू करने की क्षमता आर्थिक विकास के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। इस प्रकार, उच्च शिक्षा को केवल नई तकनीक नहीं सिखानी चाहिए, बल्कि ऐसे मानव संसाधन विकसित करने चाहिए जो इन प्रौद्योगिकियों की आवश्यकता का मूल्यांकन कर सकें और उन्हें लागू कर सकें। ज्ञान समाज के उदय के साथ, यह जागरूकता बढ़ी है कि उच्च शिक्षा अब विलासिता की वस्तु नहीं है और देश के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए अपरिहार्य है। उच्च शिक्षा को एक सामान्य बौद्धिक संपदा के रूप में पुनः संकल्पित करने की आवश्यकता है। एक सामान्य बौद्धिक संपदा के रूप में, उच्च शिक्षा को समाज से अलग इकाई नहीं, बल्कि समाज से जुड़ा होना चाहिए और समाज के अनुरोध पर सक्रिय रूप से प्रतिक्रिया देनी चाहिए। इसे संभव बनाने के लिए, उच्च शिक्षा को सबसे पहले समाज की जरूरतों के साथ निकटता से जुड़ी

प्रौद्योगिकी के विकास और प्रसार में खुद को शामिल करने की आवश्यकता है। इसके अलावा, विविध आवश्यकताओं का जवाब देने के लिए, शैक्षिक सामग्री और प्रदान करने के तरीकों में विविधता लानी होगी। सेवाएँ। उदाहरणों में से एक दूरस्थ शिक्षा का एहसास है जो सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के साथ हो सकता है।

(3) एक स्वस्थ नागरिक समाज का विकास और सामाजिक सामंजस्य स्थापित करना सामाजिक व्यवस्था में सुधार और सामाजिक एकजुटता पैदा करने में भी उच्च शिक्षा की भूमिका की मांग की जाती है। इसे नए ज्ञान की सामान्य संपत्ति के उत्पादन के माध्यम से पूरा किया जा सकता है, जिसमें लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रसार और बहुसंस्कृतिवाद के लिए सम्मान, राजनीतिक भागीदारी को बढ़ावा देना, नागरिक समाज को मजबूत करना और लोकतांत्रिक शासन को बढ़ावा देना शामिल है।

(4) आत्मसाक्षात्कार का साधन-

किसी राष्ट्र के लिए, उच्च शिक्षा आर्थिक विकास के लिए आवश्यक मानव संसाधनों को विकसित करने का एक साधन है। साथ ही यह व्यक्तियों के लिए आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करने का एक साधन है। सीधे तौर पर, लोग ज्ञान या कौशल बढ़ाकर अपनी आय और जीवन की गुणवत्ता में सुधार कर सकते हैं और फिर जीवन में उपलब्ध अपने विकल्पों का विस्तार कर सकते हैं, जिसमें कामकाजी जीवन से संबंधित विकल्प भी शामिल हैं। इसके अलावा, आजीवन शिक्षा, जो लगातार व्यक्तिगत ज्ञान और कौशल को नवीनीकृत करती है, को व्यक्तिगत सीखने की जरूरतों का जवाब देने के लिए जीवन भर गारंटी दी जानी चाहिए। इसलिए, जैसे किसी को सभी के लिए बुनियादी शिक्षा की गारंटी देनी चाहिए, वैसे ही सभी को व्यक्तियों की आशाओं और क्षमताओं के आधार पर समान रूप से उच्च शिक्षा के अवसरों की भी गारंटी देनी चाहिए।

10. उच्च शिक्षा में वर्तमान स्थिति एवं मुद्दे

उच्च शिक्षा के अवसरों का विस्तार करने की आवश्यकता के साथ, गुणवत्ता की आवश्यकताओं में हाल के बदलाव के साथ, विकासशील देशों में उच्च शिक्षा को निम्नलिखित मुद्दों का सामना करना पड़ रहा है:

(1) नामांकन विस्तार और समूहों के बीच अंतराल

उच्च शिक्षा में नामांकित लोगों की संख्या, जो 1960 में 12,000,000 थी, 1997 में बढ़कर 88,000,000 हो गई।

विशेष रूप से विकासशील देशों में वृद्धि की दर विकसित देशों की तुलना में कहीं अधिक उल्लेखनीय है: अफ्रीका में - 24 गुना वृद्धि, लैटिन अमेरिका में 16 गुना वृद्धि और एशिया और प्रशांत क्षेत्र में 11 गुना वृद्धि। हालाँकि, इससे क्षेत्रों के बीच, पुरुष और महिला के बीच, और जातीय समूहों के बीच अंतर कम नहीं हुआ। पुरुष-महिला अंतर के संबंध में सुधार अब कई क्षेत्रों में देखा जा सकता है, लेकिन पश्चिम अफ्रीका के देश अपने शेष अंतर के लिए उल्लेखनीय हैं।

(2) सीमित वित्तीय संसाधन

भले ही उच्च शिक्षा की मांग लगातार बढ़ रही है, उच्च शिक्षा संस्थानों को सीमित बजट की निरंतर स्थिति का सामना करना पड़ता है। दूसरी ओर, उप-सहारा अफ्रीकी देशों में जहाँ वित्तीय स्थिति सबसे गंभीर है, उच्च शिक्षा पर प्रति व्यक्ति सार्वजनिक व्यय अन्य शैक्षिक स्तरों की तुलना में बहुत अधिक है। दक्षिण अफ्रीका को छोड़कर उप-सहारा अफ्रीकी देशों में, उच्च शिक्षा पर प्रति व्यक्ति सार्वजनिक व्यय (केवल परिचालन व्यय) प्रति व्यक्ति जीएनपी का 100% से अधिक है; 9 ऐसे कई देश हैं जहाँ यह आंकड़ा प्रति व्यक्ति से कई गुना अधिक है जीएनपी. भारत और नेपाल को छोड़कर, एशियाई क्षेत्र के सभी देशों में प्रति व्यक्ति उच्च शिक्षा व्यय प्रति व्यक्ति जीएनपी का 30% तक है। इसकी तुलना करने पर, किसी को यह पता चल जाना चाहिए कि उप-सहारा अफ्रीका में प्रति व्यक्ति उच्च शिक्षा व्यय देशों की अर्थव्यवस्थाओं के पैमाने से कितना खराब मेल खाता है। भविष्य में भी नामांकन में तेजी से वृद्धि का जवाब देने के लिए, "उपयोगकर्ता भुगतान" सिद्धांत को लागू करना, वित्तीय संसाधनों में विविधता लाना और सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग करके उच्च लागत प्रदर्शन वाले कार्यक्रमों को डिजाइन करना अपरिहार्य है।

(3) गुणवत्ता में गिरावट

कई विकासशील देशों में, उच्च शिक्षा के विस्तार से गुणवत्ता में गिरावट आती है। निरंतर बढ़ती मांग का जवाब देते हुए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुरक्षित करने के लिए, शिक्षकों, छात्रों, सुविधाओं, उपकरण, शैक्षिक सामग्री और विधियों और वित्तपोषण सहित विभिन्न पहलुओं की गुणवत्ता बढ़ाना आवश्यक है। उच्च शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए शिक्षकों की गुणवत्ता विशेष रूप से अपरिहार्य है; इसलिए, स्नातक विद्यालय पूरा करने वाले छात्रों की संख्या का विस्तार करना एक जरूरी काम है।

इसके अलावा, जब उच्च शिक्षा का तेजी से विस्तार होता है, तो विभिन्न उच्च शिक्षा संस्थानों के बीच अंतर बढ़ जाता है। विशेष रूप से, कई देशों में, राष्ट्रीय सार्वजनिक विश्वविद्यालयों की तुलना में निजी विश्वविद्यालयों की निम्न गुणवत्ता देखी गई है, और एक ऐसी प्रणाली बनाने की आवश्यकता है जो शिक्षा और अनुसंधान की गुणवत्ता की गारंटी देगी।

(4) विविध आवश्यकताएँ

उच्च शिक्षा के विस्तार और समाज और अर्थव्यवस्था की बढ़ती जटिलता के परिणामस्वरूप, उच्च शिक्षा को अपने छात्रों की विविध पृष्ठभूमि और जरूरतों को लक्षित करने की आवश्यकता है। इसके अलावा, विभिन्न कौशल और क्षमताओं की मांग की जाती है और उनमें महारत हासिल करने के लिए प्रशिक्षण के स्तर भी अधिक विविध हो गए हैं। विशिष्ट उच्च शिक्षा संस्थानों में वैज्ञानिकों और नेताओं का विकास आवश्यक है, लेकिन सामूहिक उच्च शिक्षा के माध्यम से सामान्यवादियों का विकास भी आवश्यक है। फिर भी एक ओर, शिक्षा के समग्र प्रसार के साथ, विशिष्ट शिक्षा जो अतीत में विशेष स्कूलों या माध्यमिक स्तर पर होती थी, अब उच्च शिक्षा संस्थानों में हो रही है, 10 और उच्च शिक्षा अकादमिक से अपना दायरा बढ़ा रही है पेशेवर क्षेत्र के लिए इसके अलावा, मांग केवल उन लोगों के लिए शिक्षा की नहीं है जिन्होंने माध्यमिक शिक्षा पूरी कर ली है, बल्कि सामान्य नागरिकों के लिए उनके जीवन भर अध्ययन के स्थान की पेशकश भी की गई है। हालाँकि, उच्च शिक्षा के सभी कार्यों को एक ही उच्च शिक्षा संस्थान में समाहित करना असंभव है। इस प्रकार, अब से उच्च शिक्षा संस्थानों को उनकी विशिष्टताओं के आधार पर विभाजित करके जरूरतों को पूरा करना होगा। इसके अलावा, प्रसारण विश्वविद्यालय और अन्य जो सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हैं, विभिन्न आवश्यकताओं का जवाब देने के लिए शिक्षा के कई प्रारूप पेश कर सकते हैं।

निष्कर्ष

शिक्षकों की नौकरी से संतुष्टि और प्रतिबद्धताप्रश्नावली के माध्यम से शिक्षकों से एकत्र किए गए डेटा का प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन और पियर्सन उत्पाद सहसंबंध गुणांक जैसे सांख्यिकीय उपकरणों का उपयोग करके विश्लेषण और व्याख्या की गई। प्रश्नावली और असंरचित साक्षात्कार के खुले अंत वाली वस्तुओं के माध्यम से एकत्र किए गए डेटा का मात्रात्मक विश्लेषण से प्राप्त परिणाम का

समर्थन करने के लिए कथनों का उपयोग करके गुणात्मक रूप से विश्लेषण किया गया था।

संदर्भ

1. मैकइनर्नी, डेनिस और कोपरशोएक, हैंके और वांग, हई और मोरिन, एलेक्जेंडर। (2018)। शिक्षकों की व्यावसायिक विशेषताएँ और उनकी मनोवैज्ञानिक भलाई, नौकरी से संतुष्टि, व्यावसायिक आत्म-अवधारणा और छोड़ने के इरादे। शिक्षण और शिक्षक शिक्षा. 71. 10.1016/j.tate.2017.12.020.
2. सेनेर, सबरीये। (2015)। शिक्षण पेशे के प्रति प्रशिक्षु शिक्षकों के दृष्टिकोण की जांच: कानाक्ले ओन्सेकिज़ मार्ट विश्वविद्यालय मामला। प्रोसीडिया - सामाजिक और व्यवहार विज्ञान। 199. 571-580. 10.1016/j.sbspro.2015.07.550.
3. अंबलगन, एस और जगनाथन, जयचित्रा। (2021)। बी.एड. के बीच फ़िलिप्स क्लासरूम की धारणाएँ। शिक्षक प्रशिक्षु. विश्लेषणात्मक और प्रयोगात्मक मॉडल विश्लेषण के अंतराष्ट्रीय जर्नल। खंड XI. 1651
4. मैरीनेट, बहतिला और हई, जू। (2021)। स्कूल का वातावरण और शिक्षकों की नौकरी से संतुष्टि। शिक्षा अध्ययन के यूरोपीय जर्नल. 8. 17. 10.46827/ejes. v8i7.3799.
5. अख्तर, शफकत और हाशमी, मुहम्मद और नकवी, सैयद। (2010)। माध्यमिक स्तर पर सार्वजनिक एवं निजी विद्यालय के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन। प्रोसीडिया - सामाजिक और व्यवहार विज्ञान। 2. 4222-4228. 10.1016/j.sbspro.2010.03.668.
6. बर्मन, प्रणब और भट्टाचार्य, दिब्येंदु। (2017)। विभिन्न प्रकार के बी.एड. में शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्य संतुष्टि। पश्चिम बंगाल में कॉलेज। आईओएसआर जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस। 22. 80-99. 10.9790/0837-2202028099.
7. अहमद, वसीम और चव्हाण, बी.एस. (2015)। बी.एड. के बीच उपलब्धि प्रेरणा। सामान्य और

विशेष शिक्षा (एमआर) शिक्षक प्रशिक्षु: एक तुलना।

1. 12-

8. अनबालागन, एस. (2021)। बी.एड. का एक अध्ययन। बीएड की पढ़ाई के प्रति छात्र अध्यापकों का रुझान मद्रास जिले में डिजिटल पुस्तकालयों के प्रति छात्र शिक्षकों का रुझान। मद्रास जिले में डिजिटल पुस्तकालय। बी.एड. का एक अध्ययन। मद्रास जिले में डिजिटल पुस्तकालयों के प्रति छात्र शिक्षकों का रुझान।
9. ट्राइगार्ट, पॉल और ह्यूगो, जीन-पियरे। (2020)। दक्षिण अफ्रीकी स्कूल जिले में पुरुष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि पर स्कूल प्रबंधन की सहायक भूमिका। सामाजिक विज्ञान अनुसंधान जर्नल. 15. 136-153. 10.24297/jssr. v15i.8604.

Corresponding Author

Uma Lata Patel*

Research Scholar, Shri Krishna University,
Chhatarpur M.P. India

Email: ouriginal.sku@gmail.com